Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/227
Peer Reviewed & Refereed Journal, Jan-Feb 2024, Vol- 12/81

भाषा और व्याकरण का सहसंबंध

श्री. धर्मराज रामकृष्ण काळे
मुख्याध्यापक, सावित्रीबाई फुले विद्यालय, गडचांदूर, जि.चंद्रपूर

Paper Received On: 20 JAN 2024
Peer Reviewed On: 28 FEB 2024
Published On: 01 MAR 2024

प्रस्तावना :–

मनुष्य एक समाज मे रहनेवाला प्राणी है। वह अपने विचारो, भावनाओ को बोलकर ही व्यक्त करता है। भाषा को ध्वनी संकेतो की व्यवस्था माना जाता है। इसे विचारों के आदान प्रदान का एक आसान साधन माना जाता है। संस्कृत भाषा को हिंदी भाषा की जननी माना जाता है। भाषा शब्द को संस्कृत की 'भाष' धातू से लिया गया है। जिसका अर्थ है। बोलना हमारे भावो को प्रगट करना मनुष्य कभी शब्दो, कभी सिर हिलाने या संकेत व्दारा भी अपने विचारो को अभिव्यक्त करता है। किन्तू भाषा केवल उसी को कहा जाता है। जो बोली जाती है। सुनी जाती है। हमे भाषा के नियमो को जानने की जरूरत है। व्याकरण से भाषा को बोलना और लिखना आसान होता है। शुध्द लिखने के लिये व्याकरण से भाषा को बोलना और लिखान आसान होता है। कोई भी व्यक्ती व्याकरण को जाने बिना भाषा के शुध्द रूप को नही सिख सकता है। इसी वजह से भाषा और व्याकरण का बहुत गहरा संबंध है। व्याकरण भाषा को उच्चारण, प्रयोग, अर्था के प्रयोग को निश्चित करता है।

भाषा को शुध्द रूप मे लिखना, पढना और बोलना सिखाने वाला शास्त्र व्याकरण कहलता है। व्याकरण व्दारा भाषा के शुध्द रूप का ज्ञान होता है। इसमे भाषा के संबंध मे नियम होते है। इन नियमो के ज्ञान से ही व्यक्ति भाषा को सही रूप मे बोलना पढना और लिखना जान सकता है। भाषा के शुध्द और स्थायी रूप को निश्चित करने के लिए नियमबध्द योजना की आवश्यकता होती है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्याकरण के अंग :–

1) वर्ण विचार :– इस विचार मे वर्णो के उच्चारण, रूप, आकार, भेद, वर्णो को मिलाने की विधी लिखने की विधी बताई जाती है।

2) शब्द विचार :– इस विचार मे शब्दो के भेद व्युत्पति, रचना, प्रयोगो उत्पत्ती आदि का अध्ययन करवाया जाता है।

3) पद विचार :– इस विचार मे वाक्यो की रचना उनके भेद वाक्य बनाने, वाक्यो को अलग करने, विराम चिन्हो, वाक्य निर्माण, गठण प्रयोगो उनके प्रकार का अध्ययन करवाया जाता है।

व्याकरण की अवधारणओ की अमूर्त परिभाषाए याद करने से जादा महत्वपूर्ण है। आसपास के परिवेश को जोडकर कराये जाये। शिक्षकव्दारा इस्तेमाल की जानेवाली व्यावहारिक गतिविधीया और युक्तिया महत्वपूर्ण निभा सकती है। व्याकरण के पक्षो की समझ चरणबध्द क्रम मे विकसित की जाती है। प्रथम चरण पहचान है। दुसरा चरण प्रयोग का है। पाठयक्रम के अनुसार व्याकरण के कुछ बिंदु दिये गये है। इन बिंदुओ को ध्यान मे रखकर पाठयपुस्तक निर्माता और शिक्षक पाठ मे सहजरूप से उभरकर आनेवाले व्याकरण संबंधी और भाषा की बारीकी व सुंदरता संबंधी अन्य पक्षो को क्रमशः समझने और सराहने मे छात्र छात्राओ को सहाय्यक करते है।

भाषा व्यवहार :–

भाषा व्यवहार का संबंध भाषा प्रयोग से होता है। भाषा के व्याकरण से समाज भाषा विज्ञान की व्यवस्था बहुत कुछ भिन्न होती है। मुहावरे के प्रयोग से भाषा को नया और चमत्कारिक रूप मिल जाता है। मुहावरे के मुल स्वरूप को बदलना भी संभव नही होता क्योंकी उनको लोक संमती मिलती है। मुहावरे के प्रयोग मे हमे विशेष भाव–भंगिमाऐ भी अभिव्यंजित होती है। भाषा व्यवहार मे शैली की विशेष भूमिका होती। भाषा संरचना का मूलाधार संरचनात्मक पध्दती है जिस प्रकार भवन रचना में ईट, सिमेंट, लोहा, शक्ती अर्थात मजदूर और कारीगर की आवश्यकता होती है। तो उसी प्रकार भाषा संरचना मे ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, प्रोक्ति, और अर्थ की अपनी–अपनी भूमिका होती है। भाषा ध्वनिया का अध्ययन करते है। तो स्वर और व्यंजन आगे आते है।

भाषा की लघुत्तम, स्वतंत्र, और सार्थक इकाई को शब्द की संज्ञा दी जाती है। शब्द संरचना का अध्ययन उपसर्ग, प्रत्यय, समास तथा पुनरूक्ति आदी रूपो से करते है। जब

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शब्द वाक्य निर्माणार्थ निर्धारित व्याकरणिक क्षमता प्राप्त कर लेता है। तो उसे पद की संज्ञा दी जाती है। पद संरचना मे शब्दो के विभिन्न रूपो का अध्ययन किया जाता है।

व्याकरण और भाषा की अवधारणाऐ :–

भाषा की स्वतंत्र, पुर्ण सार्थक सहज इकाई को वाक्य कहा जाता है। वाक्य मे प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से कम से कम एक क्रिया का होना अनिवार्य है। भाषा की महत्वपूर्ण इकाई प्रोक्ती होती है। यदि ध्वनी भाषा की लघुत्तम इकाई है। तो प्रोक्ती महत्तम और अभिव्यक्ती करनेवाली इकोई है। ध्वनी शब्द पद, वाक्य और आदि भाषा की शारीरिक इकाइया है। तो भाषा की आत्मा है। अर्थ मुख्यतः मुख्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यजनार्थ किया जाता है।

भाषा सामाजिकता का मुलाधार है। भाषा के माध्यम से सभी व्यवहार होते है। परिवार और समाज की संकल्पना और भाव अदान–प्रदान सब कुछ भाषा पर आधारित है। मानवतावादी चिंतन और ज्ञान–विज्ञान का विकास भाषा के ही आधार पर संबंध है।

व्याकरण शिक्षण :–

व्याकरण किसी भाषा के बोल ने तथा लिखने के नियमो की व्यवस्थित पध्दति है। व्याकरण शिक्षण से भाषा मे शुध्दता, अनुशासन तथा स्थिरता आती है। भाषा का पूर्ण एवं शुध्द ज्ञान प्रदान कराने के लिऐ, मनोभावे एवं विचारो की शुध्द अभिव्यक्ती करने के लिये, व्याकरण भाषा के स्पष्ट नियमबध्द तथा मानव रूप की जानकारी प्रदान करती है। भाषा की प्रकृति तथा प्रयोग संबंधित आधारभूत नियमो के ज्ञान करने के लिये, व्याकरण अत्यावश्यक है। परंतू व्याकरणिक संकल्पनाओ का अलगसे अभ्यास करके भाषा का व्याकरण सिखा नही जा सकता है। संरचनात्मक उपागम सक्रिय तरीके से मौखिक उपागम पर उचित बल देता है। और औपचारिक व्याकरण का विरोध करता है।

सारांश :–

भाषा और व्याकरण मे अटूट संबंध है। भाषा तभी भाषा की कोटी मे आती है। जब उसका कोई व्याकरण है। प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है। व्याकरण के बिना भाषा के शुध्द रूप नही बोल सकता है। और नही सिख सकता है। व्याकरण शिक्षण विद्यार्थी को शुध्द रूप मे समझने एवं पहचानने मे समर्थ बनता है। व्याकरण से मातृभाषा मे शुध्दता आती है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ :–

डॉ. माहिया, डॉ. शर्मा विमलेश – व्याकरणमाला, ज्ञान विज्ञान प्रकाशन, हिंदी, 2023

भाषा अधिकगम और व्याकरण – प्राची इंडिया प्रा.लि., 1 जाने. 2023 न्यू दिल्ली

पांडे बी. एन. – आदित्यन हिंदी व्याकरण, प्रभात प्रकाशन, 1 जून 2019

बत्रा अशोक – आधुनिक हिंदी व्याकरण तथा रचना – लक्ष्मी पब्लिकेशन्स प्रायव्हेट लिमिटेड, 17 एप्रिल 2018

शास्त्री वेद प्रकाश – भाषा व्याकरण, निता प्रकाशन, 2020

मंजुनाथ डॉ. एस. ए. – हिंदी व्याकरण और रचना, वाणी प्रकाशन, 2020

पांडेय, राजेंद्रकुमार – रस–छंद–अलंकार, वाणी प्रकाशन ग्रुप, 2020

परमेश्वरन डॉ. एच. – भारती व्याकरण प्रदिपिका, वाणी प्रकाशन, 2020

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies